पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 01.03.2016 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव
के बलिदान दिवस पर
राष्ट्र रक्षा यज्ञ
बुधवार, 23 मार्च 2016
प्रातः 10 से 1 तक
जन्तर मन्तर, नई दिल्ली
भारी संख्या में पंहुचे

वर्ष-32 अंक-17 फाल्गुन-2072 दयानन्दाब्द 192 01 मार्च से 15 मार्च 2016 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.03.2016, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में शहीद सैनिकों को दी श्रद्धाजंलि
आंतकवादियों व उनके संरक्षको से सख्ती से निपटा जाये
जे.एन.यू.में हुई देश द्रोही घटना दुर्भाग्यपूर्ण-राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

जन्तर मन्तर पर आयोजित विरोध प्रदर्शन में डा.अनिल आर्य,प्रवीन आर्य,स्वामी ओम जी,महेन्द्र भाई,कै.अशोक गुलाटी,त्रिलोक आर्य,हरिचन्द आर्य व सुषमा शर्मा

नई दिल्ली। मंगलवार, 23 फरवरी 2016, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली व आर्य समाज की ओर से नई दिल्ली के ''जन्तर मन्तर'' पर कश्मीर आंतकवादी हमले में शहीद जवानों को यज्ञ कर श्रद्धाजंलि अर्पित की गई तथा गत दिनों जे.एन.यू. में घटित देश द्रोही घटना की कड़ी निन्दा करते हुए दोषियों को अविलम्ब गिरफतार करने की मांग की गई। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के नेतृत्व में श्रद्धांजलि यज्ञ व राष्ट्र रक्षा यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सैंकड़ो आर्य समाजियों ने पहुॅच कर देश की एकता व अखण्डता की रक्षा की शपथ ग्रहण की।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि समय की मांग है कि सरकार आंतकवादियों व उनके संरक्षको को सख्ती से कुचले, देश की रक्षा की कीमत पर कोई समझौता नहीं हो सकता। डा.आर्य ने रोष जताया की अफजल गुरू का महिमा मण्डन करने वाले कभी देश भक्त नहीं हो सकते, जे.एन.यू. विश्वविद्यालय की घटना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण व चिन्ताजनक है कि शिक्षा के मन्दिर में कैसी युवा पीढ़ी का निर्माण हो रहा है। आज पूरी शि़क्षा प्रणाली पर पुर्नविचार करने व उसे बदलने की अवश्यकता है जिससे देशभक्त, ईश्वर भक्त, संस्कारवान व चरित्रवान युवा शक्ति का निर्माण हो जिस पर राष्ट्र व समाज भरोसा कर सके।

परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री महेन्द्र भाई ने कहा कि जब तक देश में एक समान आचार सहिंता लागू नहीं होगी तब तक समस्या का हल नहीं होगा। उन्होंने कहा कि देश की वर्तमान परिस्थितियों में युवा पीढ़ी का दायित्व बढ़ गया है, अब युवको को जातिवाद, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद के विरूद्वआगे आना होगा। जिन स्वपनों के भारत की कल्पना हमारे शहीदों ने की थी उनको पूरा करना है। भारतीय सेना के वीर जवानों को बधाई दी गई की वह हर परिस्थिति में देश की रक्षा करते हैं।

श्री प्रवीन आर्य (प्रान्तीय महामन्त्री, उ.प्र.) ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में 80 प्रतिशत लोग आर्य समाजी थे, इसलिये आर्य समाज आज मूक दर्शक बन कर नहीं रह सकता। यह देश शहीदों की अमानत है। आर्य नेता राजेश मेहन्दीरता, विजय सब्रवाल, पूर्व राजदूत विद्यासागर वर्मा, अरूण आर्य, हरिचन्द आर्य, सुदेश भगत, कै. अशोक गुलाटी, गजेन्द्र चौहान, जीवनप्रकाश शास्त्री, भगतसिंह राठी, सुषमा शर्मा, जितेन्द्रसिंह आर्य, प्रदीप गोगिया, अंकुर आर्य, शिवम मिश्रा, माधवसिंह आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। प्रधानमन्त्री व केन्द्रीय गृहमन्त्री के नाम ज्ञापन भी दिया गया।

उत्तर पश्चिमी मण्डल ने निकाली भव्य शोभा यात्रा व किया विरोध प्रदर्शन

रविवार, 28 फरवरी 2016, उत्तर पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में आयोजित जे.एन.यू. विश्वविद्यालय की देशद्रोही घटना के विरूद्ध रानी बाग मेन बाजार में मार्च करते परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य,सुनील गुप्ता, सुरेश नागपाल, कृष्णचन्द पाहुजा, सुरेश आर्य, दुर्गेश आर्य, सुरेन्द्र चौधरी व आचार्य आनन्द जी। द्वितीय चित्र—शोभायात्रा के समापन पर आर्य समाज सन्देश विहार, दिल्ली में मण्डल के प्रधान सुरेन्द्र गुप्ता व मन्त्री जोगेन्द्र खट्टर का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, सीमा कपूर, अनिता आनन्द, सुरेश आर्य, विम्मी—नवीन अरोड़ा, विजेन्द्र आनन्द व सुधा वर्मा। कुशल संचालन दुर्गेश आर्य ने किया व वीरेन्द्र आर्य ने धन्यवाद किया।

सच्चे शिव के प्राप्त होने पर ही मनुष्य को आनंद की प्राप्ति होती है।

– डॉ विवेक आर्य

सच्चे शिव के प्राप्त होने पर ही मनुष्य को आनंद की प्राप्ति होती है। आज बोध दिवस शिवरात्रि का पावन पर्व ज्ञान, भक्ति और उपासना का दिवस है। महर्षि दयानंद सरस्वती का बोध दिवस 7 मार्च को शिवरात्रि के दिन मनाया जाएगा। माना जाता है कि 177 साल पहले शिवरात्रि के तीसरे प्रहर में 14 वर्षीय बालक मूलशंकर के ह्रदय में सच्चे शिव को पाने की अभिलाषा जगी थी। शिव' विद्या और विज्ञान का प्रदाता स्वरूप है परमात्मा का। इसी दिन मूलशंकर को बोद्ध–ज्ञान प्राप्त हुआ था और वह महर्षि दयानन्द सरस्वती बन सके।इस दिन को याद करते हुए दयानंद बोध दिवस के रूप में हर साल मनाया जाता है। शिवरात्रि का अर्थ है वह कल्याणकारी रात्रि जो विश्व को सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति कराने वाली है। मनुष्य के जीवन में न जाने कितनी शिवरात्रियां आती हैं किन्तु उसे न ज्ञान होता है और न परमात्मा का साक्षात्कार, न उनके मन में सच्चिदानंद परमात्मा के दर्शन की जिज्ञासा ही उत्पन्न होती है। बालक मूलशंकर ने अपने जीवन की प्रथम शिवरात्रि को शिव मंदिर में रात्रि जागरण किया। सभी पुजारिओं और पिता जी के सो जाने पर भी उन्हें नींद नहीं आई और वह सारी रात जागते रहे। अर्ध रात्री के बाद उन्होंने शिव की मूर्ति पर नन्हे चूहे की उछल कूद करते व मल त्याग करते देखकर उनके मन में जिज्ञासा हुई की यह तो सच्चा शिव नहीं हो सकता ३ । जो शिव अपनी रक्षा खुद ना कर सके वो दुनिया की क्या करेगा और उन्होंने इसका जबाब अपने पिता व पुजारिओं से जानना चाहा लेकिन संतोषजनक उत्तर न मिल पाने के कारण उन्होंने व्रत तोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने 21 वर्ष की युवा अवस्था में घर छोड़ कर सच्चे शिव की खोज में सन्यास लेकर दयानंद बने व मथुरा में डंडी स्वामी विरजानंद के शिष्य बनने हेतु पहुचे । गुरू का द्वार खटखटाया तो गुरू ने पूछा कौन? स्वामी जी का उत्तर था कि यही तो जानने आया हूं। शिष्य को गुरू और गुरू को चिरअभिलाषित शिष्य मिल गया। तीन वर्ष तक कठोर श्रम करके वेद, वेदांग दर्शनों का अंगों उपांगों सहित अध्ययन किया और गुरु दक्षिणा के रूप में स्वयं को देश के लिए समर्पित कर दिया । इसके बाद आर्य समाज की स्थापना की। आज विश्व भर में अनेकों आर्यसमाज हैं जो महर्षि के सिद्धांतों, गौरक्षा और राष्ट्र रक्षा आदि के कार्यो में संलग्न है। महर्षि की जिंदगी का हर पहलु संतुलित और प्रेरक था। एक श्रेष्ठ इंसान की जिंदगी कैसी होनी चाहिए वे उसके प्रतीक थे। उनकी जिंदगी की कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। इस लिए उनके संपर्क में जो भी आता था, प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। वे रोजाना कम से कम तीन–चार घंटे आत्म–कल्याण के लिए ईश्वर का ध्यान करते थे। इसका ही परिणाम था कि बड़े से बड़े संकट के वक्त वे न तो कभी घबराए और न तो कभी सत्य के रास्ते से पीछे ही हटे। उनका साफ मानना था, सच का पालन करने वाले व्यक्ति का कोई दोस्त हो या न हो, लेकिन ईश्वर उसका हर वक्त साथ निभाता है। पूरे भारतीय समाज को वे इसी लिए सच का रास्ता दिखा सके, क्योंकि उन्हें ईश्वर पर अटल विश्वास था और वे हर हाल में सत्य का पालन करते थे। वे कहते थे, इंसान द्वारा बनाई गयी पत्थर की मूर्ति के आगे सिर न झुकाकर भगवान की बनाई मूर्ति के आगे ही सिर झुकाना चाहिए। हम जैसा विचार करते हैं हमारी बुद्धि वैसे ही होती जाती है। पत्थर की पूजा करके कभी जीवंत नहीं बना जा सकता है। वे स्त्रियों को मातृ–शक्ति कहकर सम्मान करते थे। दयानंद जी ने लोगों को समझाया कि तीर्थों की यात्रा किए बिना भी हम अपने ह्रदय में सच्चे ईश्वर को उतार सकते हैं। उन्होंने जाति–पाति का घोर विरोध किया तथा समाज में व्याप्त पाखण्डों पर भी डटकर कटाक्ष किए। जाति–पाति और वर्ण व्यवस्था को व्यर्थ करार दिया और कहा कि व्यक्ति जन्म के कारण ऊँच या नीच नहीं होता। व्यक्ति के कर्म ही उसे ऊँच या नीच बनाते हैं । समाज को हर बुराई, कुरीति, पाखण्ड एवं अंधविश्वास से मुक्ति दिलाने के लिए डट कर सत्य बातों का का प्रचार–प्रसार किया, उनकी तप, साधना व सच्चे ज्ञान ने समाज को एक नई दिशा दी और उनके आदर्शों एवं शिक्षाओं का मानने वालों का बहुत बड़ा वर्ग खड़ा हो गया। महर्षि दयानंद जी की बातें आज भी उतनी ही कारगर और महत्वपूर्ण हैं, जितनी की उस काल में थीं । यदि मानव को सच्चे ईश्वर की प्राप्ति चाहिए तो उसे महर्षि दयानंद जी के मार्ग पर चलते हुए उनकी शिक्षाओं एवं ज्ञान को अपने जीवन में धारण करना ही होगा। महर्षि दयानंद जी के चरणों में सहस्त्रों बार साष्टांग नमन।।

वानप्रस्थ आश्रम रोजड़ में प्रवेश प्रारम्भ

स्वामी सत्यपति जी द्वारा स्थापित वानप्रस्थ साधक आश्रम,रोजड़,गुजरात में ''संस्कृत व्याकरण,उपनिषद्,दर्शन अध्यापन केन्द्र'' में नये ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया जा रहा है।

इच्छुक सम्पर्क करे – 02770 – 287417, 291555, 9427059550.

दानी महानुभावों से अपील

यदि आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं तो हमें सहयोग करें,कृपया अपना सहयोग परिषद् के खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित

– डा. अनिल आर्य, मो.09810117464.

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर जम्मु में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर जम्मु में 5 जून से 12 जून 2016 तक लगाया जायेगा। इच्छुक बालिकायें सम्पर्क करें–

सचिवः आरती खुराना–9910234595।

–मृदुला चौहान, संचालिका

।। ओ३म् ।। स्थापित 3 जून 1978

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी०) नई दिल्ली

KENDRIYA ARYA YUVAK PARISHAD (Regd.) NEW DELHI

युवा उद्घोष (पाक्षिक) पंजीकृत पत्रिका

बलमुपास्व

आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-7 (भारत), फोनः 9810117464, 2765-3604 फैक्सः 2765 3539

सेवा में,
माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी,
प्रधानमन्त्री,भारत सरकार,
नई दिल्ली.

प्रधान मंत्री कार्यालय Prime Minister's Office डाक अनुभाग DAK SECTION Date 23/2/16

महोदय,
सादर नमस्ते ।

निवेदन यह है कि गत दिनों जे.एन.यू. विश्वविद्यालय में घटित देशद्रोही घटना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण व चिन्ताजनक है, समस्त आर्य समाज इस घटना की कड़ी निन्दा करता है । देश की आजादी की लड़ाई में महर्षि दयानन्द से प्रेरणा पाकर अनेकों लोग शहीद हो गये, आर्य समाज का देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान रहा इसलिये आर्य समाज इन परिस्थितियों में मूक दर्शक नहीं रह सकता ।

आज 23 फरवरी 2016 को जन्तर मन्तर पर ''राष्ट्र रक्षा यज्ञ'' करके कश्मीर आंतकवादी हमले में शहीद सैनिको को श्रद्धाजंलि अर्पित की गई ।

1.हमारा आपसे अनुरोध है कि शहीद सैनिकों के परिवारों को पूर्ण सम्मान एवम् हर सम्भव सहयोग प्रदान किया जाये ।
2. जे.एन.यू. विश्वविद्यालय में घटित देशद्रोही घटना की पूरी गम्भीरता से जांच करवायी जाये एवम् दोषियों के विरूद्व कठोर से कठोर कार्यवाही की जाये ।
3. शिक्षा के मन्दिर में इस तरह की घटनायें पूरी शिक्षा प्रणाली पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करती है कि किस प्रकार की युवा पीढ़ी का वहां निर्माण हो रहा है, अतः इस शिक्षा प्रणाली पर पुर्नविचार करने व उसे बदलने की आवश्यकता है जिससे चरित्रवान, देश भक्त, ईश्वर भक्त, संस्कारित युवा पीढ़ी का निर्माण हो सके ।
आशा है है आप इस सन्दर्भ में शीघ्र यथोचित कार्यवाही करेंगे । धन्यवाद व आभार सहित ।

भवदीय–

अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष
9810117464

महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय महामन्त्री
9013137070

Website : www.aryayuvakparishad.com • aryayouthgroup@yahoogroups.com
E-mail : aryayouth@gmail.com • anil_arya@escorts.co.in

'स्वामी स्वतन्त्रानन्द महर्षि दयानन्द के एक प्रमुख योग्यतम शिष्य'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आर्यसमाज के अनूठे संन्यासी थे। आपने अमृतसर के निकट सन् 1937 में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना की और वेदों का दिगदिगन्त प्रचार कर स्वयं को इतिहास में अमर कर दिया। आपके बाद आपके प्रमुख शिष्य स्वामी सर्वानन्द सरस्वती इसी मठ के संचालक व प्रेरक रहे। आपके जीवन पर स्वामी सर्वानन्द जी ने एक लेख के माध्यम से बहुत महत्वपूर्ण जानकारी दी है। उसी को हमने आज के इस लेख की विषय वस्तु बनाया है। स्वामी सर्वानन्द जी लिखते हैं कि पूज्यपाद सन्त शिरोमणि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज इतिहास के एक जाने–माने विद्वान् थे। प्रो. राजेंद्र 'जिज्ञासु' ने पूज्य स्वामी जी महाराज का जीवन–चरित लिखा है और 'इतिहास दर्पण' नाम से स्वामी जी महाराज के प्रेरणाप्रद लेखों की खोज, संकलन व सम्पादन किया है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज प्रतिवर्ष तीन बार दीनानगर मठ में कथा किया करते थे। सदा नई–नई घटनाएं और नये–नये उदहरण दिया करते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दिनों में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने हरियाणा का भ्रमण किया। हरियाणा सैनिक भरती का बहुत बड़ा क्षेत्र है। श्री स्वामीजी ने हरियाणा के जवानों को देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाने की प्रेरणा दी थी। उनके देश–प्रम को उबारा। तब देश के अन्दर 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चल रहा था और देश से बाहर आजाद हिन्द सेना देश को गुलामी के बन्धन से मुक्त करने के लिए लड़ रही थी। श्री महाराज की इस ऐतिहासिक यात्रा में श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती व आचार्य भगवान्देव जी, परवर्ती नाम स्वामी ओमानन्दसरस्वती उनके साथ रहे। इनका कहना था कि स्वामी जी महाराज प्रतिदिन नया–नया इतिहास और नई–नई घटनाएं सुनाते थे।

विख्यात शिक्षाविद् विद्यामार्तण्ड आचार्य प्रियव्रतजी कहा करते थे कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को आर्यसमाज के इतिहास की छोटी–बड़ी घटनाओं का जितना ज्ञान था उतना और किसी को नहीं। आश्चर्य इस बात पर होता था कि यह सारा ज्ञान उन्हें स्मरण वा कंठस्थ था। डायरी या नोट बुक देखने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती थी। भारत के प्राचीन इतिहास की बातें भी स्वामीजी महाराज यदा–कदा सुनाया करते थे। एक बार प्रसिद्ध इतिहासकार श्री जयचन्द्र विद्यालंकार दीनानगर मठ, निकट अमृतसर में आये। आपने स्वामीजी महाराज से प्राचीन भारत के नगरों व प्रदेशों के नाम पूंछें। स्वामीजी ने उनकी सारी समस्या का समाधान कर दिया और एतद्विषयक एक लेख भी पत्रों में प्रकाशित करवाया। पं. चमूपति जी आर्यजगत् के एक अद्भुत लेखक, कवि व विचारक थे। आपकी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के प्रति असीम श्रद्धा थी। आप लाहौर में स्वामीजी महाराज से इतिहास–विषय पर घण्टों चर्चा किया करते थे। आपने लिखा है कि स्वामीजी को इतिहास की खोज का चस्का है। स्वामीजी महाराज को विभिन्न प्रदेशों, वर्गों व जातियों के इतिहास व रीति–नीति का सूक्ष्म ज्ञान था।

किस मत की कौन–सी बात कैसे आरम्भ हुई, कौन–सा मत कैसे पैदा हुआ, उसने संसार का क्या व कितना हित–अहित किया, विश्व पर कितना प्रभाव छोड़ा, इन सब बातों की विस्तृत विवेचना स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी किया करते थे। श्रोता व पाठक स्वामी जी महाराज के गम्भीर ज्ञान को देख, सुन व पढ़कर आश्चर्य करते थे। सिख इतिहास के भी स्वामीजी मर्मज्ञ थे। सिखमत किन परिस्थितियों में उत्पन्न हुआ, क्या कारण थे, सिखपंथ कैसे बढ़ा, इसने देश के लिए क्या किया, कहां भूल की––सिख गुरुओं का वास्तविक मन्तव्य क्या था, लोगों ने इसे कितना समझा और देश पर इसका क्या प्रभाव पड़ा, इन सब बातों का उन्हें गहरा व प्रामाणिक ज्ञान था। जाने–माने सिख विद्वान् प्रिंसिपल गंगासिंहजी की प्रार्थना पर आपने सिख मिशनरी कालेज में सिख इतिहास पर एक सप्ताह तक व्याख्यान दिये। व्याख्यानमाला की समाप्ति पर जब प्रिंसिपल गगासिंह जी ने प्रश्न पूछने को कहा तो सबने यह कहा कि हमें कोई शंका नहीं है। हमें स्वामीजी ने तृप्त कर दिया है। प्राचार्य जोधासिंह जी तो दयानन्द मठ, दीनानगर में आकर आपसे बहुत विषयों पर चर्चा किया करते थे।

इतिहास की घटनाओं के कारणों व परिणामों को स्वामीजी महाराज बहुत अच्छे ढंग से समझाया करते थे। एक बार उदार विचार के एक मौलाना ने जो आर्य विद्वानों के सम्पर्क में थे, स्वामी जी के सामने कुछ शंकाएं रखीं। आपने मौलवीजी के सब प्रश्नों के उत्तर दिये। आपके विचार सुनकर उस मौलाना ने कहा इस्लाम–विषयक आपके गहरे ज्ञान से मैं बहुत प्रभावित हूं। मैंने ऐसी युक्तियुक्त प्रमाणिक बातें कभी नहीं सुनी। हमारे मौलवी इतनी गहराई में जाते ही नहीं।

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के इतिहास विषयक विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित इतिहास विषयक लेखों का एक संलकन 'इतिहास दर्पण' नाम से सन् 1997 में प्रकाशित हुआ जिसका सम्पादन प्रसिद्ध विद्वान, लेखक, विचारक और इतिहासकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु ने किया है। स्वामी सर्वानन्द जी ने इस पुस्तक और प्रा. जिज्ञासु जी के परिचय में लिखा है कि आपने इस 'इतिहासदर्पण' ग्रन्थ के लिए बहुत परिश्रम किया है। इस अद्भुत पुस्तक में विभिन्न समयों में लिखे गये स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के लेखों का संग्रह किया गया है। इस पुस्तक का पाठ करने से आर्यसमाज के इतिहास के सम्बन्ध में ऐसी–ऐसी बातों का ज्ञान होगा जो बातें लोगों ने कभी न सुनी हों और धर्म–कर्म के बारे में बहुत–सी शंकाओं का भी इतिहासदर्पण पुस्तक से समाधान होगा। श्री जिज्ञासु जी ने इन लेखों के लिए बहुत दूर–दूर के विद्वानों से सम्पर्क करने के साथ अनेक संस्थाओं एवं समाजों में जाकर खोज की है। स्वामी सर्वानन्द जी बताते हैं कि उन्हें बड़ा आश्चर्य होता है कि जो बातें धर्म और इतिहास के बारे में हमने कभी सुनी ही नहीं थी, वे बातें जिज्ञासु जी ने खोज निकाली हैं जो इतिहासदर्पण पुस्तक में संग्रहीत हैं।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का संक्षिप्त परिचय भी जान लेते हैं। स्वामी जी का जन्म लुधियाना के मोही ग्राम में एक प्रतिष्ठित सिख जाट परिवार में पौष मास की पूर्णिमा को सन् 1877 में हुआ था। स्वामीजी के माता–पिता ने आपको 'केहर सिंह' नाम दिया था। आपके पिता सेना में सूबेदार मेजर थे। माता समयकौर जब दिवंगत हुई तब केहरसिंह बहुत छोटी अवस्था के बालक थे। आपका पालन आपकी नानी माता महाकौर जी ने आपके ननिहाल लताला में बड़े लाड़–प्यार से किया। आपने स्कूली शिक्षा मिडल तक प्राप्त की। आपके ननिहाल में उदासीन साधुओं के डेरे से आपका सम्पर्क हुआ। उसके महन्त पं. विशनदास जी की प्रेरणा से आपने संस्कृत पढ़ी। फरीदकोट, ऋषिकेश व अमृसर आदि नगरों में भी कई विद्वानों के पास अध्ययन किया। यूनानी व आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति का भी आपने गहन अध्ययन किया था। प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने लिखा है कि कई बड़े–बड़े हकीमों ने दयानन्द मठ, दीनानगर में आपके चरणों में बैठकर आपसे यूनानी व आयुर्वेदिक चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त की। सन् 1898 में आपने अपनी लाखों की सम्पत्ति पर लात मार कर महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार मार्ग को अपनाया। सन् 1901 में आपने परवरनड़ ग्राम में स्वामी पूर्णानन्द जी से संन्यास–दीक्षा लेकर प्राणपुरी नाम पाया और कालान्तर में आप स्वामी स्वतन्त्रानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। सन् 1901 में ही आपने दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों की धर्म प्रचारार्थ यात्रा की और इसका आरम्भ कलकत्ता के बन्दरगाह से जलपोत से किया। इस यात्रा में आपने मलयेशिया, फिलिपीन्स द्वीपसमूह, हिन्देशिया व चीन आदि कई देशों का भ्रमण कर वहां वेदों के अमृतमय ज्ञान की वर्षा की और सन् 1904 में स्वदेश लौटे। प्रा. जिज्ञासु जी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पूर्णरूपेण आर्यसमाज के प्रचार से जुड़ने पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि स्वामी जी भ्रमण करते हुए वैदिक धर्म का ही प्रचार करते थे, परन्तु भारत–भ्रमण से जब पंजाब लैटे तो पं. विशनदास जी ने आपको लताला बुलाकर आर्यसमाज के साथ जुड़कर धर्मप्रचार करने की आज्ञा दी। आपने इसे प्रवृत्ति का बखेड़ा कहकर ऐसा करने में संकोच दिखाया परन्तु पं. विशनदास जी का आदेश मानते हुए आर्यसमाज के साहित्य के विशेष अध्ययन में लग गए। आपकी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी थी। पन्द्रह दिनों में ही आपने गीता के सात सौ श्लोक कण्ठस्थ कर लिये। अब थोड़े से समय में आपने आर्यसमाज के सब महत्वपूर्ण छोटे–बड़े ग्रन्थों का स्वाध्याय करके आर्यसमाज की सेवा के लिए समर्पित हो गये। आपने पं. विशनदास जी के साथ पहली बार आर्यसमाज मोगा के वार्षिकोत्सव में भी भाग लिया। अपनी दूसरी वेद प्रचार यात्रा में आपने मारीशस में तीन वर्षों तक वेदों का प्रचार किया। वहां से लौटने के समय तक मारीशस में 58 आर्य समाजें स्थापित हो चुकी थीं। आपके जाने से पूर्व यह संख्या 13 थी और वर्तमान में यह संख्या एक सौ से अधिक है। स्वामीजी ने देश की आजादी के आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया था। पराधीनता के काल में हैदराबाद में हिन्दुओं को धार्मिक आजादी नहीं थी। पाकिस्तान व बंगलादेश में हिन्दुओं पर जो प्रतिबन्ध व दमघोटू वातावरण है, वैसा ही वातावरण तब हैदराबाद के हिन्दुजगत में था। कांग्रेस व इसके प्रमुख नेताओं को हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों के इस हनन पर कोई सहानुभूति नहीं थी। अतः आर्यसमाज को सन् 1939 में वहां एक अभूतपूर्व व्यापक सत्याग्रह करना पड़ा जिसके फील्ड मार्शल स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी थे। यह आन्दोलन पूर्ण सफल रहा। देश की आजादी के बाद भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री और गृहमन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने हैदराबाद का भारत में विलय कराया और यह स्वीकार किया कि इस हैदराबाद रियासत के भारत गणराज्य में विलय की भूमिका आर्यसमाज के सत्याग्रह ने तैयार की थी। स्वामी जी ने विश्व के अनेक देशों में प्रचार करने के साथ भारत में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार, दलितोद्धार कार्य व गोहत्या निवारण के अनेक प्रशंसनीय कार्य किये। आपका जीवन अनेक प्रेरणाप्रद घटनाओं से पूर्ण है। धर्म प्रचार में आपने अपने धर्म पिता महर्षि दयानन्द के जीवन के अनुसार ही अपने जीवन व चरित्र को ढ़ाला था। प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने आपका जीवनचरित लिखकर एक अभूतपूर्व कार्य किया है। 3 अप्रैल, 1955 को 78 वर्ष की आयु में आपने नश्वर शरीर छोडा। जिज्ञासु जी ने लिखा है कि स्वामीजी गोधन की रक्षा के लिए वीरगति को प्राप्त हुए अर्थात् शहीद हुए।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द महर्षि दयानन्द की परम्परा के उनके योग्यतम शिष्यों में से एक थे। उनका यशस्वी जीवन देशवासियों की एक आध्यात्मिक एवं सामाजिक धरोहर व पूंजी है। उनसे मार्गदर्शन लेकर देश और समाज को उन्नत किया जा सकता है। हम इस महापुरुष को उनके यशस्वी कार्यों के लिए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

– 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

महापौर सुभाष आर्य भी पंहुचे प्रदर्शन में व सार्वदेशिक सभा में परिषद् की बैठक सम्पन्न

मोती नगर चौक पर आयेजित प्रदर्शन में महापौर सुभाष आर्य,साथ में डा.अनिल आर्य,रवि चड्डा,सुरेश टण्डन,आर.पी.तनेजा,महेश भयाना व संयोजक राकेश आर्य। द्वितीय चित्र–रविवार, 21 फरवरी 2016,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी व प्रमुख कार्यकताओं की बैठक सार्वदेशिक सभा,महर्षि दयानन्द भवन,आसिफ अली रोड़,नई दिल्ली में परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य की अध्यक्षता में सोल्लास सम्पन्न हुई । आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने पर सभी आर्य जनों व कार्यकताओं का हार्दिक आभार व्यक्त किया गया । ग्रीष्मकालीन युवक व युवतियों के शिविर देश भर में पूरे जोर शोर से लगाने का निश्चय हुआ, सभी जिला अध्यक्ष व प्रान्त अध्यक्ष शिविर की स्थान व तिथियां निश्चित कर अविलम्ब सूचना देंगे, जिससे यथोचित व्यवस्था हो सके । चित्र में–राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के साथ बायें से गोपाल जैन,अनिल हाण्डा,भानुप्रताप वेदालंकार(इन्दौर),राष्ट्रीय महामन्त्री महेन्द्र भाई,योगेश उपाध्याय(अरूणाचल प्रदेश) व प्रदीप गोगिया।

मोती नगर चौक व उत्तम नगर चौक पर आर्य समाज निकला सड़कों पर

रविवार, 28 फरवरी 2016,दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन व पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में जे.एन.यू. विश्वविद्यालय की देशद्रोही घटना के विरूद्ध मोती नगर चौक व उत्तम नगर चौक पर विशाल प्रदर्शन का आयोजन किया गया। चित्र में सम्बोधित करते परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य साथ में मण्डल के प्रधान रवि चड्डा,कस्तूरीलाल मक्कड़,ओमप्रकाश आर्य,भूषणलाल वर्मा,डा.सुबोध जिन्दल,दिनेश आर्य,सुरेश टण्डन व संयोजक राकेश आर्य। द्वितीय चित्र–उतम नगर चौक धरने पर बैठे–स्वदेश छिब्बर,दिनेश आर्य,हरीश कालरा,बलदेव सचदेवा,ओमप्रकाश घई,मायाराम शास्त्री,दयानन्द दहिया आदि। संचालन वेदप्रकाश व वीरेन्द्र सरदाना ने किया।

साहित्यकार लक्ष्मणराव की ''दंश'' का विमोचन व डा.अनिल आर्य ने किया दीप प्रज्जवलित

गुरूवार, 25 फरवरी 2016,पंजाबी भवन,दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,नई दिल्ली में साहित्यकार श्री लक्ष्मणराव की पुस्तक ''दंश'' का विमोचन करते डा.अनिल आर्य,प्रो. कुलदीप सलिल आदि । राजधानी के जाने माने साहित्यकारों के साथ श्री ओम सपरा भी उपस्थित थे । द्वितीय चित्र– आर्य महासम्मेलन में दीप प्रज्जवलित करते डा.अनिल आर्य,साथ में–चौ. लाजपतराय आर्य(करनाल),राष्ट्रीय कवि प्रो.सारस्वतमोहन मनीषी,सत्यव्रत सामवेदी(जयपुर),स्वामी विश्वानन्द जी(मथुरा),आचार्य प्रेमपाल शास्त्री व गोबिन्दसिंह भण्डारी(बागेश्वर)।

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद के 85वें बलिदान दिवस पर कृतज्ञ राष्ट्र की श्रद्धांजलि

पी.चिदम्बरम का वक्तव्य शहीद जवानों का अपमान - आर्य नेता अनिल आर्य

शनिवार, 27 फरवरी 2016, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी,दिल्ली में अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद के 85 वें बलिदान दिवस पर श्रद्धाजंलि अर्पित की गई। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य रमेशचन्द शास्त्री ने यज्ञ करवा कर किया तथा राष्ट्र कल्याण के लिये आहुतियां दी गई। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा पाकर हजारों नौजवान देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। गरम दल व नरम दल के रूप में दो विचारधारायें देश में चली जहां एक का नेतृत्व महात्मा गांधी कर रहे थे ओर दूसरी ओर चन्द्रशेखर आजाद, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, अशफाक उल्ला खां आदि क्रान्ति की आवाज बुलन्द कर देश को आजाद करवाने में जुटे थे, उन शहीदों का बलिदान देश कभी भूल नहीं सकता, आज की युवा पीढ़ी को उनके बलिदान को बताने व पढ़ाने की आवश्यकता है जिससे वह स्वतन्त्रता के सही मतलब को समझ सके।

डा.आर्य ने कहा कि आज देश के लिये दुर्भाग्यपूर्ण है कि पी. चिदम्बरम जैसे जिम्मेदार लोग भी राजनीतिक रोटियां सेकने के लिये अपनी ही तत्कालीन सरकार के फैसले को गलत बता कर अफजल की सजा को ही विवादस्पद बना रहे हैं, यह अत्यन्त खेद जनक व पूरी न्याय प्रक्रिया पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है। शायद वह संसद हमले में शहीद हुए जवानों के बलिदान को भूल गये हैं, जिनके कारण वह सभी आज बोल पा रहे हैं। समारोह के मुख्य अतिथि ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मैजिस्ट्रेट दिल्ली) ने कहा कि आज देश की युवा पीढ़ी को देश भक्त शहीदों का जीवन चरित्र पाठ्यक्रम में पढ़ाने की आवश्यकता है। नयी युवा पीढ़ी उनसे प्रेरणा पाकर राष्ट्र भक्त बन सकेगी। देश भक्ति की भावना बचपन से ही संस्कारों में डालने की आवश्यकता है। केन्द्रीय मन्त्री स्मृति ईरानी से शहीदों की गौरव गाथाओं को पाठ्यपुस्तकों में यथोचित स्थान देने की मांग की गई। गौधरा में 14 वर्ष पूर्व 27 फरवरी 2002 में बलिदान हुए कारसेवकों को भी श्रद्धाजंलि अर्पित की गई।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970